International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197
Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 5; September 2017; Page No. 1060-1062

दक्षिण एशिया में बहुलवादी विविधता और राष्ट्र–निर्माण : एक अध्ययन

अमित कुमार सिंह
शोध छात्र (जे0आर0एफ0), राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश
दक्षिण एशिया के लगभग सभी देशों में बहुलवादी विविधता सम्बन्धी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है। इसका सीधा कारण है कि इस क्षेत्र में विभिन्न जातियां, धर्म, अनेक भाषायें तथा भौगोलिक पहचान की विविधता अनेकों रूपों एवं स्वरूपों में व्याप्त है। इस प्रकार जातिगत, धार्मिक एवं एक समूह द्वारा अपने वंश, भाषा एवं क्षेत्र को दूसरों से श्रेष्ठतर मानना एक खास प्रकार के मतभेद एवं घृणा को जन्म देता है जो तनाव में परिवर्तित होते–होते कभी भी खूनी संघर्ष में तब्दील होकर नरसंहार पर उद्यत हो जाता है।

मूल शब्द : बहुलवादी विविधता, राष्ट्र–निर्माण, दक्षिण एशिया।

प्रस्तावना

आज जातीय संघर्ष दिन–प्रतिदिन बढ़ते जा रहे हैं चाहे भारत में कश्मीर एवं पंजाब में पाकिस्तानियों का प्रश्न हो या बाबरी मस्जिद विवाद, श्रीलंका में तमिलों, पाकिस्तान में सिंधी, पंजाबी या मुहाजिरों की बात हो, नेपाल में भूटिया या भूटान में नेपालियों एवं हिन्दुस्तानियों का प्रश्न हो सभी इससे ग्रसित हैं। अतः संक्षिप्त में यहाँ इस प्रकार के वर्गीय, जातीय या धार्मिक समूह रहते हैं, विशेष रूप से सीमावर्ती क्षेत्रों में वहाँ निम्न प्रकार की समस्यायें एवं तनाव उत्पन्न होते हैं जो राजनीतिक समस्या में परिणित होकर अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों को प्रभावित करते हैं।

प्रथम जब कोई राष्ट्र जातिगत संघर्ष में उलझ जाता है और क्रमशः राजनीतिक संकट पैदा कर देता है तो आमतौर पर इसका आरोप दूसरे देश पर लगा देता है। यह एक प्रकार की कूटनीति है, जैसे श्रीलंका तमिल समस्या के लिए भारत को उत्तरदायी मानता है। द्वितीय एक राज्य के शासक कभी–कभी अपने देशवासियों की राजनीतिक या सांस्कृतिक दृष्टि या अपना प्रभाव स्थापित करने के लिए दूसरे राज्य में जातीय समस्या को उकसाते हैं, जैसे नेपालियों को समर्थन देकर सिक्किम का विलय भारत में होना आदि। तृतीय एक राज्य द्वारा अपने विरोधी पड़ोसी राज्य के पृथकतावादी आन्दोलन को नैतिक या सामरिक सामग्री संबंधी सहयोग एवं सहायता देना, जिससे पड़ोसी देश कमजोर होकर प्रतिद्वन्दी की स्थिति में न रहे। जैसे–भारत द्वारा पाकिस्तान के विभाजन में बांग्लादेश की सहायता करना या पाकिस्तान द्वारा कश्मीर एवं पंजाब में पृथकतावादियों (उग्रवादियों) को नैतिक एवं सैन्य सामग्री उपलब्ध कराकर उकसाना इत्यादि।

उपरोक्त कारण दक्षिण एशिया में पूर्णतः पाये जाते हैं। ''यही कारण है कि विभिन्न प्रकार की बहुलवादी विविधता आधारित राजनीतिक समस्याओं का स्वरूप इस क्षेत्र में बड़ा ही जटिल है जिसकी वजह से अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध प्रभावित हुए बिना नहीं रहते। इस क्षेत्र के समस्त देशों की सीमाएं भारत के साथ जुड़ती हैं जिसके कारण विभिन्नता आधारित राजनीतिक समस्याएं द्विपक्षीय से बहुपक्षीय तथा बहुपक्षीय के साथ–साथ बहुआयामी हो गयी है। मुहाजिर पाकिस्तान में रह रहे हैं जिनमें असंतोष बढ़ रहा है। यही स्थिति नेपाल, भूटान के संदर्भ में भी है। जिनके कारण समस्याएं जटिलतम हो जाती है। इनमें कुछ तत्व निम्नलिखित हैं।

पाकिताान के सिंध प्रान्त के सिंधी भारत के बम्बई में रह रहे सिंधियों के साथ उनका जातीय आधार पर काफी तनाव है। पंजाब में रह रहे सभी मुसलमान पाकिस्तान का प्रमुख आधार स्तम्भ है। भारतीय पंजाब में कुल जनसंख्या का 52% सिक्ख तथा 48% हिन्दू हैं, लेकिन उनकी भाषा पंजाबी है। इसलिए उनमें अपनत्व की भावना आपस में पायी जाती है तथा इस आधार पर उनमें आपसी सम्बन्ध विकसित होते हैं भाषाई आधार पर स्थानीय भाषा पंजाबी बोलने की क्षमता के कारण पंजाब के सिक्ख पाक अधिकृत कश्मीर में घुसपैठ कर खालिस्तान जैसा आन्दोलन कर चुके हैं। अधिकांश उग्रवादियों ने पाक अधिकृत कश्मीर में शरण भी ले रखी है। सन् 1971 में भारतीय सेना भारतीय–बंगाली भाषाविदों के कारण पाकिस्तान के विरूद्ध भारत ने पूर्वी पाकिस्तान (बांग्लादेश) का साथ दिया था। भाषा के आधार पर बृहत्तर तमिल ईलम की बात की जा रही है। अतः भाषाई भूमिका जातीय राजनीतिक समस्या के परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

दक्षिण एशिया के सभी देशों के साथ भारत भौगोलिक एवं सांस्कृतिक रूपों से जुड़ा हुआ है। भारत एवं पाकिस्तान के हिन्दू–मुसलमान आन्दोलन को खत्म हुए काफी समय हो गया लेकिन इनके जख्म अभी भी भरे नहीं हैं। किसी भी प्रकार के जातीय आधार पर राजनीतिक असंतोष आदि पाकिस्तान में होता है तो भारत के कान खड़े होते हैं तथा वह अपनी चिंता जताता है, जबकि अयोध्या जन्मभूमि, बाबरी मस्जिद पाकिस्तान का ध्यान आकर्षित करता है तथा सहानुभूति अर्जित करता है।

भारत की नेपाल के साथ दो समस्याऐं, तराई प्रदेश दक्षिण (नेपाल) में हिन्दी बोलने वाले लोगों का आन्दोलन बिहार तथा उत्तर प्रदेश में अपना प्रभाव दिखाते हैं। भूटान के (भूटिया तथा लेपचाज) जातीय विभाजन नेपालियों के साथ भिन्नता रखते हैं तथा अनावश्यक तनाव पैदा कर रहे हैं। ऐसा भूटान का मानना है कि मारवाड़ी अल्पसंख्यकों को शंका की दृष्टि से देखा जाता है।

भारत में जातीय आधार के राजनीतिक मतभेद बांग्लादेश के साथ 1950–1960 के दशक में अपने चरमोत्कर्ष पर थे। जो बांग्लादेश के अस्तित्व में आने के बाद भी जारी रहे। बांग्लादेश से लाखों लोग भारत आ गये जबकि भारत से बंगलादेशी शरणार्थियों को वापस भेजने की मांग अभी भी की जा रही है। यद्यपि तनाव को कम

करने सम्बन्धी एक करार पर हस्ताक्षर भी किये जा चुके हैं तब भी स्थिति ठीक नहीं है।

भारत, श्रीलंका के साथ 1983 से इसी प्रकार के संघर्षों का शिकार है। सिंघली तथा तमिलों का आपसी तनाव श्रीलंका में गृहयुद्ध जैसी स्थिति अख्तियार कर चुका था। भारतीय मूल के तमिल मछुआरे जाफना (श्रीलंका) प्रान्त तक आसानी से पहुँच जाते हैं। श्रीलंका के तमिल भारत स्थित तमिलनाडु के तमिलों के साथ गहरे सांस्कृतिक एवं परम्परागत लगाव रखते हैं तथा इन्हें तमिल राज्य के (ईलम) अस्तित्व हेतु भारत से सहायता की अपेक्षा भी रखते हैं तथा श्रीलंका भारत को इसके लिए उत्तरदायी मानता है और कहता है कि श्रीलंका के तमिल उग्रवादियों ने तमिलनाडु (भारत) में प्रशिक्षण तथा अन्य सैनिक सहायता प्राप्त की। तमिल उग्रवादियों ने यद्यपि भारत से बांग्लादेश जैसी मदद की अपेक्षा की। लेकिन भारत, श्रीलंका विभाजन का विरोधी है तथा स्व0 राजीव गांधी ने श्रीलंका सरकार को उसकी प्रभुसत्ता एवं अखण्डता बनाये रखने की प्रतिबद्धता के प्रति वचनबद्धता की बात भी बार–बार दोहराई, जिसके कारण तमिल उग्रवादी नाराज हो गए तथा उन्होंने राजीव गांधी की जून, 1991 में हत्या कर दी। संक्षेप में सभी देश पाकिस्तान, नेपाल, भूटान, श्रीलंका तथा बांग्लादेश इस प्रकार की विविधता से ग्रसित हैं जिनसे राजनीतिक उलझने बढ़ती है तथा वे नये संदर्भों में अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में कटुता पैदा करती है।

विश्व के अन्य देशों की तरह एशिया के देशों में भी घरेलू जातीय राजनीतिक संकट एवं मुसीबतें अक्सर पैदा होती है जो अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों में तनाव पैदा करती है। भारत–विभाजन की शल्यक्रिया जो 1947 में जातीय आधार पर की थी जिसके परिणाम स्वरूप पाकिस्तान का जन्म हुआ था तथा आतंकवादी गतिविधियों को पाक–प्रोत्साहन के रूप में आज पंजाब तथा कश्मीर में भुगत रहे हैं। उसी प्रकार पाकिस्तान को पंजाबी, बंगाली, मुसलमानों की सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक असमानता ने अपने पूर्वी भाग (पूर्वी पाकिस्तान) से हाथ धोना पड़ा। ''श्रीलंका में तमिल तथा सिंघली संघर्ष में श्री राजीव गांधी के जीवन को खोना पड़ा। पाकिस्तान में पंजाबी, बांग्लादेश में बंगाली मुस्लिम, श्रीलंका में सिंघली, नेपाल में नेपाली तथा मालद्वीव में मुस्लिम समूह अपना वर्चस्व कायम करने की स्थिति में हैं जबकि अल्पसंख्यक भयाक्रान्त रहते हैं।

भारत में विभिन्न वर्ग क्षेत्रीय आधार पर पृथक–पृथक प्रभुसत्ता स्थापित किये हुये हैं। इनमें भी जाति–उपजाति, वर्ग–उपवर्ग तथा क्षेत्रीय एवं उपक्षेत्रीय समूह हैं। इस प्रकार की पृथकता खूनी संघर्ष को जन्म देती है जिसके लिए प्रत्येक देश अपनी स्थिति अनियंत्रित होने पर अपने पड़ोसी पर आरोप प्रत्यारोप लगाता है, जिनसे तनाव पैदा होते हैं यही स्थिति मालद्वीव में हैं जहाँ जातीय, धर्म तथा भाषा समूह उभरकर तनावों को जन्म दे रहे हैं वहाँ के नागरिकों को आर्थिक सुविधाओं से वंचित किया जा रहा है जिसका परिणाम उत्तर एवं दक्षिण मालद्वीव दो भागों में विभाजित दिखाई प्रतीत होता है।

उपर्युक्त आधार पर स्पष्ट है कि जाति, वर्ग, धर्म, भाषा तथा क्षेत्रीय आधार पर बहुआयामी वर्ग समूह दक्षिण एशिया के प्रायः समस्त देशों में विद्यमान है तथा अपनी प्रकृति एवं प्रवृत्ति के अनुसार क्षेत्रीय सम्बन्धों पर प्रतिकूल एवं निर्णायक असर डालते हैं। दक्षिण एशिया के समस्त देशों की घरेलू राजनीति की यह एक विशिष्टता है। यह विशिष्टता कभी–कभी सम्बद्ध देश की राज्य संरचना के लिए एक ओर घातक बनती तो दूसरी ओर निश्चय ही राष्ट्रीय एकीकरण में ऑक्सीजन का काम करती प्रतीत होती है। बांग्लादेश, मालद्वीव, पाकिस्तान, नेपाल, श्रीलंका, भारत एवं भूटान सभी इस समस्या से पीड़ित हैं।

दक्षिण एशिया के समस्त देश एक दूसरे के साथ द्विपक्षीय आधार पर किसी न किसी रूप में उलझे हुए हैं, जिससे शांति स्थापना में बाधा के साथ–साथ तनाव बढ़ता है। इन समस्याओं में सबसे प्रमुख है–भारत पाकिस्तान के बीच द्विपक्षीय सम्बन्धों की समस्या। ''ये दोनों देशों की ऐतिहासिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक विरासत एक जैसी है।

दक्षिण एशिया के देशों पर इन समस्याओं ने बहुआयामी प्रभाव डाला है जिसके कारण क्षेत्रीय देशों में परस्पर तनाव, द्वेषपूर्ण प्रतिस्पर्धा द्विपक्षीय मतभेदों तथा संकुचित स्वार्थों के प्रति प्रतिबद्धता आदि को जन्म दिया है तथा इन सभी निर्णायक तत्वों ने अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्धों पर व्यापक विभाजनीय प्रभाव पड़ा है। अतः इस दृष्टि से हमें इन समस्याओं की जड़ में जाकर किसी समाधान की तरफ अग्रसर होना चाहिए तथा ऐसे तमाम उपाय या समाधान हो सकते हैं जिनके कारण अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में पुनः तेजी लाकर उन्हें बहाल किया जा सकता है। इसके लिए संभवतः सामूहिक प्रयास सहमति के आधार पर किये जा सकते हैं। दक्षिण एशिया की समस्याओं के समाधान हेतु सबसे पहले परस्पर विश्वास का वातावरण बनाया जाना चाहिए। जब तक प्रत्येक का प्रत्येक को आपसी सौहार्द एवं विश्वास अर्जित नहीं हो जाता तथा उसका किसी भी तरह लोगों के दिल जीतने के लिए व्यावहारिक प्रदर्शन नहीं किया जाता, किसी चमत्कार की आशा नहीं की जा सकती।

सन्दर्भ

1. अहसन, अबुल : दक्षेस ए पर्सपैक्टिव (यूनिवर्सिटी प्रेस, ढाका), 1992
2. आनंद, आरजी, पी, : साउथ एशिया : इन सर्व ऑफ रिजनल आइडेन्टी बैन्यास पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1991
3. अगवानी एम0एस0 (सं0) : साउथ एशिया : स्टेब्लिटी एण्ड रीजनल कॉ–आपरेशन, (सेन्टर फॉर रिसर्च इन रूरल एण्ड इण्डस्ट्रियल डवेलपमेन्ट, चण्डीगढ़), 1983
4. इंजीनियर, असगर अली : एथनिक कॉनफिलिक्ट इन साउथ एशिया, (अजंता पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली), 1987
5. कौशिक, एस0एन0, महान, आर व रमाकान्त : इण्डिया एण्ड साउथ एशिया, साउथ एशियन पब्लिशर्स, नई दिल्ली, 1991
6. कोडीकारा, शैल्टन यू : स्ट्रेटजिक फैक्टर्स इन इन्टरस्टेट रिलेशन्स इन साउथ एशिया (हैरीटेज, नई दिल्ली), 1985
7. कोहेन, स्टीफेन पी : द सिक्यूरिटी साउथ एशिया : अमेरिकन एण्ड एशियन पर्सपैक्टिव्स (लान्सर इन्टरनेशनल, नई दिल्ली), 1987
8. गुप्ता भवानीसेन : रीजनल कॉ–आपरेशन एण्ड डेवलपमेन्ट इन साउथ एशिया (पर्सप्शनस, मिलिट्री एण्ड न्यूक्लियर आर्म्स रेस–प्रॉब्लम्स, वो–1), साउथ एशियन पब्लिशर्स, नई दिल्ली), 1988
9. गुप्ता, शिशिवर : इण्डिया एण्ड रीजनल इंटीग्रेशन इन साउथ एशिया, (एशिया पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली), 1964
10. जैटली नेनस (सं0) : रीजनल सिक्योरिटी इन साउथ एशिया, लानसर्स बुक्स, नई दिल्ली, 1999
11. दास, देवेन्द्र के (सं0) : दक्षेस रीजनल कॉ–ऑपरेशन एण्ड डेवलपमेन्ट, (दीप एण्ड दीप पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली), 1972
12. धर्मदासानी, एम0डी0 (सं0) : कॅन्टेम्परेरी साउथ एशिया, (शालीमार पब्लिशिंग हाउस, वाराणसी), 1985

13. नाहर, इमेन्युल : दक्षेस प्रोब्लम्स एण्ड प्रोस्पेक्ट्स, (सेहगल पब्लिशर्स सर्विस नई दिल्ली), 1991
14. परमानन्द एण्ड खन्ना सरोज बी : इन्ट्रोडक्शन टू साउथ एशिया, (प्रगति पब्लिशर्स, दिल्ली), 1997
15. पाण्डेय, बी0एन0 : लीडरशिप इन साउथ एशिया, (विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली), 1997
16. प्रधान, विश्वा : दक्षेस एण्ड इट्स यूचर (विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली), 1989
17. फर्डनीस, उर्मिला : एथनिसिटी एण्ड नेशनल बिल्डिंग इन साउथ एशिया, (मैथ्यू एण्ड कंपनी लि0 न्यूयार्क), 1983
18. मुखर्जी, आई0एन0 : साउथ एशिया प्रोबलम्स, एण्ड प्रोस्पेक्ट्स (विकास पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली), 1988
19. सिंह दिनेश कुमार : पॉवर पॉलिटिक्स इन साउथ एशिया, (रेडियन्ट पब्लिशर्स, नई दिल्ली), 1995
20. सुधाकर, ई0 : दक्षेस–ओरिजन, ग्रोथ एण्ड यूजर, (ज्ञान पब्लिशिंग हाउस नई दिल्ली), 1994
21. हैग खादीजा : साउथ एशियन चैलेन्जेज, (आक्सफोर्ड युनिवर्सिटी प्रेस, काराची), 2002